आर्योदय
ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE
- VEDA

Aryodaye No. 306 ARYA SABHA MAURITIUS *1st May to 15th May 2015*

ओ३म्। अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्य दातये । निहोता सत्सि वर्हिषि ।

सामवेद १.१.१

Om! Agna ā yāhi vitayé grināno havyadataye Ni hotā satsi barhishi

Sāmveda 1/1/1

Glossaire / Shabdārtha

Agne : O Seigneur ! Source de toute lumière spirituelle !
Vitaye : Resplendissant
Grinānaha : Dans toute ta splendeur adorable.
Havyadātaye : Pour récompenser les fidèles pour leur dévotion.
A yāhi : Viens leur conférer ta bénédiction.
Hotā : Tu pourvois à tous nos besoins et tu nous protèges. C'est de toi que nous proviennent toutes les choses matérielles, toute la connaissance, la capacité intellectuelle, la spiritualité, l'humanisme, la compétence dans plusieurs domaines, l'énergie, la force, la santé, le savoir-faire et le sentiment de bien-être.
Barhishi : Dans notre prière (Yajna) et dans notre esprit pendant notre méditation/nos exercices spirituels.
Ni Satsi : Nous invoquons ta présence. *(cont. on pg. 2)*

N. Ghoorah

दान कब और किसे ....

डा० उदयनारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न, प्रधान आर्य सभा

जिस तरह अनेक अंगों के जुड़ने से शरीर बनता है, उसी तरह जब धर्म के साथ दान जुड़ता है तब धर्म की विशालकाय काया पूर्णता को प्राप्त करती है । निश्चयतः इसीलिए सभी मत-मज़हबों में दान को बड़ा महत्व दिया जाता है ।

पाठकगण, क्या कभी आपने विचारा है कि बादल आकाश में अर्थात् ऊपर क्यों रहता है ? उसका निवास स्थान नीचे, धरती पर क्यों नहीं है? संस्कृत के एक कवि ने इसका बड़ा मन-भावन उत्तर दिया है – बादल धरती को वर्षा का दान करता है, इसलिए उसका स्थान ऊपर है ।

उस व्यक्ति का स्थान भी मेघ - सम ऊपर हो जाता है, जो सात्विक दान देकर किसी दुखी को नया जीवन देता है। जो आदमी यह जानता है कि धर्म क्या है, वही सच्चे मन से दान देता है। जो गरीब होते हुए भी आवश्यकता पड़ने पर अपनी शक्ति के अनुसार दिल खोलकर दान देते हैं, वे दिल के बादशाह होते हैं। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि उदारता गुण है, जबकि कंजूसी दोष।

प्रश्न उठता है कि दान कब और किसे दिया जाय? इसका अच्छा उत्तर महाभारत देता है, यथा –

दरिद्रान् भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे धनम् ।
व्याधि तस्यौषधं पथ्यं, नीरुजस्य किमौषधैः ।।

हे कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर! तुम दरिद्रों की दरिद्रता दूर करो अर्थात् भूखों को खाना-पीना और नंगों को कपड़ा देकर उनकी सहायता करो । धनी आदमी को भोजन और वस्त्र मत दो । जो बीमार है, उसको दवा दो। जो रोगी नहीं है, उसको दवाई देने का क्या मतलब।

पाठकवृन्द ! आपको विदित ही है कि हाल में नेपाल देश में ज़लज़ला आया। भूकम्प के कारण तबाही मच गई। हज़ारों लोग चल बसे। बहुत लोग घायल हुए। महाकाल ने अपना भयंकर नाच दिखाया। इस समय अस्पतालों में घायलों और बीमारों की भीड़ के कारण जगह नहीं है। भोजन, जल और घर के बिना हज़ारों लोग दुखी हैं। अनेक देश पीड़ितों की सहायता के लिए आगे बढ़ रहे हैं। हमारे प्रधान मन्त्री ने भी सभी देशवासियों से आर्थिक सहायता के लिए अपील की है। क्या ऐसे दुखी लोगों की मदद करना हर आदमी का धर्म नहीं बनता? ऐसे ही समय में दान देना सात्विक दान कहलाता है। महाभारत कहता है –

दातव्यमिति यद्दनं, दीयतेऽनुपकारिणे।
देशे काले च पात्रे च, तद्दानं सात्विकं स्मृतम् ।।

अर्थात् दान देना मेरा कर्तव्य है, ऐसा विचार करके और देश, काल तथा पात्र का विवेक करके, जिसने कभी उसका उपकार न किया हो, ऐसे मनुष्य को जो दान दिया जाता है, वह सात्विक दान कहा गया है ।

महाभारत के अनुसार अच्छा दान वही है, जो उचित देश, उचित समय एवं योग्य पात्र को देखकर दिया जाता है। इस समय उचित पात्र नेपाल के पीड़ित-दुखित लोग हैं, जिन्हें भोजन, वस्त्र और आवास की आवश्यकता है। हम जल्दी से आगे

बढ़कर आर्थिक दान दें। यही हमारा धर्म है।

विवाह आदि उत्सवों में बहुत फ़िज़ूल खर्च किया जाता है। यदि आपने विवाह, पार्टी आदि का आयोजन किया हो तो अनावश्यक व्यय न करके अपने धन को बचाइये और उसे दान में दीजिए। यह सात्विक दान होगा। इस दान के बदले आपको सुख-संतोष और शांति मिलेगी। यह पुण्य का काम होगा। मानवता की सेवा होगी।

सम्पादकीय

धन की लालसा

आधुनिक काल में जीवन-यात्रा को सुगमता पूर्वक पूर्ण करने के लिए धन की अति आवश्यकता महसूस होती है। आज कदम-कदम पर धन की उपयोगिता है। बिना धन के जीवन कष्टमय बन जाता है। सुबह से शाम तक रुपयों की ज़रूरत होती है। इसीलिए दुनिया में दरिद्रता सबसे बड़ा अभिशाप मानी जाती है ।

जीवन में धर्म पूर्वक कमाया हुआ धन हमें सुख, शान्ति, संतोष, प्रसन्नता, नीरोगता आदि प्रदान करता है। अधर्म, पाप या गलत तरीके से कमाया हुआ धन आरम्भिक काल में फलता-फूलता है, मगर कुछ ही समय बाद नष्ट हो जाता है। ऐसी सम्पत्ति मनुष्य को बुराइयों, वासनाओं, भोगों आदि की ओर ले जाती है। तरह-तरह की इच्छाएँ बढ़ने से इंसान चिंता, बेचैनी और तनाव में रहता है, उसके सुखमय जीवन में अशान्ति का राज्य होता है। उसे न दिन में चैन, न रात्रि में नींद आती है।

पाप से धन कमाने वाले व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। धन संग्रह करने की लालसा बढ़ने से आदमी परेशान है। आज बहुत से लोभी जरूरत के लिए नहीं बल्कि लालच के कारण धन-प्राप्ति में लगे हैं। वे यह भूलते जा रहे हैं कि लोभ का कोई अन्त नहीं, वे रुपयों की खोज में जीवन भर भटकते रहते हैं। इसी कारण संसार में संघर्ष, अशांति, ईर्ष्या भाव और मानसिक रोग तेज़ी से बढ़ते जा रहे हैं। हमारे जीवन में शान्ति और संतोष नहीं है, हम व्याकुल हैं।

धन की लालसा आदमी का ईमान खराब कर रही है। अधिक धन प्राप्त करने की इच्छा हमें शान्ति से बैठने के लिए बाधाएँ पहुँचा रही है। अपने बढ़ते खर्च के हिसाब से आमदनी बढ़ाने की धुन में हैं। सांसारिक भोगों के पीछे धन-कमाऊ हो गये हैं। जीवनोपयोग के लिए धन कमाना अच्छी बात है, परन्तु उसे गलत साधनों से कमाना बुरी बात है ।

धर्म पूर्वक कमाना और खर्च करना 'लक्ष्मी-पूजा' है। उचित तरीके से कमाई हुई सम्पत्ति सुख देती है और अनुचित ढंग से कमाई हुई सम्पति दुख-ही दुख देती है – वह हमारे पतन का कारण बन जाती है। वैदिक-धर्म यही बताता है कि धन के पीछे कभी भी धर्म को न त्यागो, क्योंकि धन से महत्वपूर्ण धर्म है। धन तो सदा रहने वाला नहीं है, परन्तु धर्म सदा साथ देने वाला होता है ।

धन कमाने के लालच में आज कितने धन लोभी कई प्रकार के पाप कर रहे हैं। वे यह भूल रहे हैं कि जनता की कमाई हुई सम्पत्ति को लूट कर वे अपनी आत्मा को दूषित कर रहे हैं, अपनी बुद्धि को भ्रष्ट कर रहे हैं, अपने मन को मलिन कर रहे हैं। वे धोखे, छल, चोरी या कई गलत तरीकों से अबोध प्राणियों की सम्पत्ति लूट कर उनको क्षति पहुँचा रहे हैं, उन्हें पीड़ित कर रहे हैं, दुखी कर रहे हैं। परोपकार के बदले में अपकार करके अपनी तिज़ोरी भर रहे हैं। उन नादान लोभियों को इतना भी ख्याल नहीं कि मरने के बाद कुछ साथ जाने वाला नहीं ।

प्राचीनकाल में लोग धर्म की कमाई पर विशेष बल देते थे। धर्म पूर्वक धन प्राप्त करके वे खाद्य पदार्थ और जीने के बाकी साधन जुटाते थे। आज धर्म छुटता जा रहा है, लोग सांसारिक भोग विलास में फंस कर कई गलत तरीकों से धन इकट्ठा करने में लगे हुए हैं। हम अपने समस्त आर्य परिवारों को सावधान करना चाहते हैं कि कभी भी अधिक धन कमाने के लालच में आकर अपनी मेहनत की कमाई उन धोखेबाजों को न सौंपें, अन्यथा दरिद्रता आपका पीछा न छोड़ेगी। आपका पतन निश्चित है ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न -- उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

१०९ वाँ जन्म दिवस

पिछले कुछ वर्षों से अलग स्व० पं० वासुदेव विष्णुदयाल का १०९ वाँ जन्म दिन धूमधाम से मनाया गया। चूँकि उनका जन्म सावान ज़िले के तायाक गाँव में सप्ताह भर का कार्यक्रम आयोजित किया गया था। पोर्ट लुइस वॉटर फ्रोंट में जहाँ उनकी आदमकाय प्रतिमा खड़ी है वहाँ फूल चढ़ाए गए। कला एवं संस्कृति मंत्री माननीय संताराम बाबू, लेडी सरोजनी जगनाथ, सत्यदेव प्रीतम (प्रधान प्रो० वासुदेव बिसुनदयाल ट्रस्ट फण्ड) पंडित जी के दो बच्चे सुरेन बिसुनदयाल, श्रीमती अरुणा हरबंस और भारतीय उच्चायुक्त के प्रतिनिधि ने फूलों के गुच्छे प्रतिमा के पास अर्पण किए। अन्त में मंत्री, ट्रस्ट के प्रधान तथा सुरेन बिसुनदोयाल ने बारी बारी से दो शब्द कहकर कृतांजलि अर्पण की।

पंडित जी अपने जीवित काल में सदा यज्ञ प्रेमी रहे थे और १२ दिसम्बर सन् १९४३ में पोर्ट लुईस के गाँधी मैदान में महायज्ञ किया था। इसलिए सावान ज़िला परिषद् ने अपने शाखा समाज के सहयोग से और प्रो० वासुदेव बिसुनदोयाल ट्रस्ट फण्ड के तत्वावधान में रविवार १२ अप्रैल से लेकर रविवार १९ तक विभिन्न जगहों पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया था।

प्रोग्राम निम्न प्रकार के थे :– रविवार १२ अप्रैल २०१५ - रिव्येर जू पोस्त में यज्ञ और प्रवचन, सोमवार १३ अप्रैल सुयाक आर्य समाज - यज्ञ और प्रवचन, बुधवार १५ अप्रैल शाम ३.०० बजे से ४.३० बजे तक – आश्रम में यज्ञ और प्रवचन के बाद आश्रितों को भोजन से सत्कार किया गया। सुबह ८.०० बजे तायाक स्थित बिसुनदयाल अजायब घर (म्यूज़्यम) के प्रांगण में झण्डा फहराया गया।

शनिवार १८ अप्रैल को प्रातः ८.०० बजे – यज्ञ और प्रवचन रविवार ता० १९ अप्रैल को दिन के १.०० बजे साप्ताहिक समारोह को पूर्ण किया गया। मौक़े पर दो घण्टों का कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें मुख्य अतिथि सत्यदेव प्रीतम/श्रीमती अरुणा हरबंस, राजेन रामजी, दीपक नौलोटा, तायाक महिला समाज की प्रधाना श्रीमती सी. मधु और तायाक आर्य समाज के तरुण प्रधान द्वारा संदेश दिये गये । धन्यवाद ज्ञापन भगवानदास बुलाकी जी ने किया।

कार्य का संचालन आर्य सभा के नवनिर्वाचित अन्तरंग सदस्य प्रवीण बुधन ने किया। अन्त में सभी को जलपान से सत्कार किया।

सम्मान समारोह

माहेवर्ग आर्य मंदिर रविवार ३ मई २०१५ को वह गौरव पूर्ण स्थल रहा जहाँ पिछले २९ मार्च को आर्य सभा के १८ मेम्बरों के त्रैवार्षिक चुनाव में सफल निर्वाचित सदस्यों को सम्मानित किया गया। लगे हाथ श्रम दिवस भी मनाया गया।

आज मोरिशस के श्रमिकों को अवकाश प्राप्त होता है और बिना नौकरी किये एक दिन की पूरी तन्ख्वाह दी जाती है। पहले आम छुट्टी नहीं होती है पर अब १९५० से आरम्भ कर आज तक सार्वजनिक छुट्टी होती है। हमारे देशवासी भी दुनिया के श्रमिकों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहे हैं। यह अपने आप में बहुत बड़ी बात है।

बहुकुण्डीय

श्रीमती सुमंगली देवी भारद्वाज यज्ञशाला में बहुकुण्डीय यज्ञ पिछली १ ली मई को चिरञ्जीव भारद्वाज आश्रम के भव्य यज्ञशाला में बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न हुआ। श्रम दिवस मनाने का वही मौका था।

आर्य समाज केवल धार्मिक संस्था नहीं है। समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने एक खुला समाज बनाया था। समाज सुधार के साथ जिस बात से भी मानव का कल्याण हो, हम आर्य समाजी वे सभी काम करते हैं। इसलिए हम शारीरिक, मानसिक और सामाजिक सेवा करते हैं। हम राजनीतिक कार्य भी करते हैं। वृद्ध जनों की सेवा के साथ हम ड्रग सेवन से पीड़ित लोगों की भी सेवा करते हैं। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि भी करते हैं। इस प्रकार हमने सिद्ध किया कि आर्यसमाज केवल धार्मिक नहीं है।

बहुकुण्डीय यज्ञ के बाद भजन-कीर्तन हुआ। श्रीमती धनवन्ती रामचर्ण द्वारा स्वागत भाषण। तुरन्त बाद प्रान्त के नामी पं० जानकी जी द्वारा परिवार पर एक भाषण हुआ। सभा उपप्रधान सत्यदेव प्रीतम ने श्रम दिवस का इतिहास थोड़े शब्दों में सुनाया और अन्त में कुमारी मोहिनी प्रभु ने शाकाहारी भोजन पर एक सारगर्भित भाषण दिया। मोहिनी को सुनकर श्रोताओं को प्रसन्नता की सीमा न रही।

इस प्रकार प्रभाकर जीऊथ द्वारा धन्यवाद समर्पण के पश्चात कार्यक्रम समाप्त हुआ।

श्रम दिवस

श्रमिकों के नाम पर यह दिवस मनाया जाता है। यह न केवल एक देश में मनाया जाता है बल्कि संसार के लगभग सभी देशों में इस दिवस के अवसर पर सार्वजनिक अवकाश होता है। लोग एक दिन काम पर नहीं जाते। बस केवल जहाँ सेवा अनिवार्य होती है जैसे – अस्पताल, पुलिस बल या दम्कल विभाग आदि।

दुनिया में सबसे पहले १८०० के वर्षों में इंग्लैण्ड में यह मनाना आरम्भ हुआ था। वहाँ पर यह दिवस मनाने का एक लम्बा परम्परा रही १ ली मई को। १८३२ में पहली मई को एक भारी भीड़ लगी थी तभी से उसका नाम रखा गया था श्रम दिवस याने "Labour Day" १८८३ रोबर्ट ओवेन (Robert Owen) नाम के करोड़-पति और एक प्रसिद्ध समाज सेवी ने ऐलान किया था कि पहली मई को एक विशेष दिन घोषित करना चाहिए तभी से यह मान्यता दी गयी। धीरे-धीरे यह परम्परा फ्रांस से होते हुए पूरे यूरोप में फैल गयी। और अन्त में संयुक्त राज्य अमेरिका में भी वहाँ के लोग मनाने लगे।

मोरिशस में भी यह बात पहुँची और सब से पहले नये बनाये गये मज़दूर दल ने भी सन् १९३८ में पहली बार यह दिवस मनाया और पुराने घुड़दौड़ के मैदान शाँ-दे-मार्स में ३५,००० कामगर छोटे किसान और हाथ से काम करने वाले श्रमिक जमा हुए थे।

उसके एक साल बाद १९३९ में उसी शाँ-दे-मार्स में १५,००० लोग उपस्थित हुए जहाँ मज़दूर दल के तत्कालीन नेताओं ने कामगरों को सम्बोधन किया। यहाँ प्रश्न उठता है 'क्या कारण था कि एक साल पहले जहाँ ३५,००० लोग उपस्थित थे वहाँ २०,००० कम लोगों ने उपस्थिति दी। उत्तर में यह कहा जा सकता है कि उस वक्त के मील मालिक और शक्कर उद्योग पति लोगों को मज़दूर दल की गतिविधियों से सख्त चिढ़ थी। वे मज़दूरों और अन्य कामगरों को एकता में आने से डरते थे। इसलिए शायद कहीं न कहीं मज़दूरों पर दबाव डाला गया होगा। उस समय लोग शक्कर कोठी के केंप में रहते थे और लोग रोज़ी-रोटी वहाँ कमाते थे। शायद इसीलिए इतने कम लोग उपस्थित थे ।

लेकिन दल के नेता लोग हताश होने वाले प्राणी नहीं थे। उन लोगों पर मज़दूरों की जागृति में अटल विश्वास था। उन लोगों ने अपना प्रयास जारी रखा।

सन १९४८ में ऐतिहासिक आम चुनाव हुआ। भारतीय मज़दूरों के वंशज और गुलामों की संतानों को उस चुनाव में अभूतपूर्व विजय प्राप्त हुई। उनका साहस बढ़ा और परिणाम स्वरूप तत्कालीन मज़दूर दल के अध्यक्ष गीरोज़मों ने १९४९ के अप्रैल मास में सरकार के काऊँसिल में एक प्रस्ताव रखकर १ पहली मई को आम छुट्टी घोषित करने की माँग की। उनका प्रस्ताव सर्व-सम्मति से पास हुआ और १९५० की पहली मई को आम छुट्टी करार कर दी गई ।

१९५२ में जब पहली मई को शाँ-दे-मास में मीटिंग हुई तो टापू भर से ५०,००० लोगों ने उसमें भाग लिया । तब तक के लिए मोरिशस में इतनी भारी भीड़ कभी जमा नहीं हुई थी। मज़दूरों के नाम पर यह भारी भीड़ इकटटी हुई थी जैसे – १८७२ में और १९०९ में मज़दूरी के नाम शाही आलोग बैठाया गया था किसी को यकिन करना मुश्किल था कि मज़दूरों के नाम पर ब्रिटिश मोरिशस में यह सब कुछ होना सम्भव था। तब ही से मोरिशस ने एक नया मोड़ लेना आरम्भ किया जो देश की स्वतन्त्रता तक आकर विजय प्राप्त की।

आर्य सभा एक सुधारवादी समाज है। जहाँ कहीं भी और जब कभी भी देश के कल्याण की चर्चा होती है आर्य समाज आनदोलन सोया नहीं रहता। सरकार के साथ कदम में कदम मिला कर काम करता है। हमने भी इस साल अधिक के अधिक जगहों पर श्रम दिवस मनाया और देश के कल्याण के लिए यज्ञ किया और कहीं-कहीं बहुकुण्डीय यज्ञ हुआ। इन पंक्तियों के लेखक को कम से कम दो स्थानों पर उपस्थित होकर श्रम दिवस पर अपने विचार रखने का मौका मिला। एक बेलमार के श्रीमती सुमंगली चिरञ्जीव यज्ञशाला में और दूसरा माहेवर्ग आर्य मंदिर में।

Om! Agna ā yāhi vitayé grināno havyadataye Ni hotā satsi barhishi

Sāmveda 1/1/1

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

C'est le premier verset (mantra) du Sāmveda qui préconise la dévotion. Parmi les quatre Vedas c'est le plus petit (1875 versets) mais en ordre d'importance, les sages l'ont mis à l'apogée à cause des facteurs suivants –

(a) La présence de la musique qui exprime de l'harmonie et de grande piété à notre prière où l'on chante les versets pour rendre hommage à Dieu

(b) Les chapitres suivants qui s'y trouvent :

Purush-Sukta, Naasadiya-Sukta, Brahmacharya-Sukta et bien d'autres dont le thème principal englobe la philosophie de très haut niveau. En faisant ce constat les érudits occidentaux en Sanskrit tels que Max Muller, Romain Rolland (un philosophe français), Schopenhauer (un savant allemand), Sir William Jones (un Juge), Jacolliot (un savant Français), Maeterlinck (détenteur de Prix Nobel), Dr Alfred Wallace (celui qui a découvert la théorie de l'évolution de Darwin) et les autres ont été émerveillés, et ils se demandaient comment se pouvait-il que L'Inde d'antan possédait des sages aussi évolués qui avaient pu acquérir une connaissance si profonde de la philosophie, de la dévotion et de la spiritualité. Ainsi, ce fait indéniable prenait à contrepied la théorie occidentale de l'évolution qui professait qu'à cette époque primitive les hommes n'avaient pas encore connu la civilisation et erraient sur la terre comme des barbares.

Après ces quelques mots en guise d'introduction, voici en bref le message transmis à nous tous par ce mantra sacré du Sāmveda.

O Seigneur ! Le créateur de l'univers, nous sollicitons ta participation et ta bénédiction dans notre prière, notre méditation et notre étude. C'est à toi que nous offrons notre dévotion et notre hommage au cours de cette prière, car, tu es notre Dieu Unique, digne d'adoration. C'est toi qui détiens toute la richesse matérielle et spirituelle du monde, et c'est de toi que nous proviennent toute la force, l'énergie et tout le savoir. Puisses-tu, par ta lumière spirituelle et ton omniprésence dans notre esprit, dans notre cœur et dans notre âme, illuminer notre intelligence de sorte que nous ayons des pensées sublimes et la bonne inspiration dans notre vie, et que nous organisions toujours des sessions de prière collective.

O Seigneur ! Nous souhaitons que tu sois toujours présent dans notre cœur.

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

NEPAL SOLIDARITY FUND

Date	Names	(Rs) Amount Received	
30/4/15	Mr Vidiaprakash Kissoondoyal	5,000	
5/5/15	Mohunlall Mohith Foundation	10,000	
6/5/15	Pt. Basdeo Chunnoo	2,000	
6/5/15	Swami Somanand	1,000	
8/5/15	Hindu Maha Sabha	15,000	
9/5/15	Pta. Baurun Sooresha	1,150	
9/5/15	Pt. Fakoo	4,950	
11/5/15	Dr Oudaye Narain Gangoo	3,500	
11/5/15	Mr Bissessur Rakhal	2,000	
11/5/15	Baie du Tombeau AMSBch 452	1,000	
11/5/15	DAV College Porl Louis	17,950	+ (Rs5000/- Teledon)
11/5/15	Plaines Wilhems AZP	927	
11/5/15	Sangram Bhawan - Branch no. 100	2,625	
11/5/15	Pt. J.Muttra - Belle Vue, C. Grenier A. Samaj	2,260	
11/5/15	- Riv. des Galets Arya Samaj	1,565	
11/5/15	- St. Aubin Arya Samaj	500	
11/5/15	- Chemin Grenier A. Samaj	1,140	
11/5/15	Pta. Coonti Hemraz & Others	5,485	
	- Rotin, Q. Bornes AMS	700	
11/5/15	Mrs Indira Mattar	4,200	
11/5/15	Mrs Jayshree Sookar	2,975	
11/5/15	Mr & Mrs Satyadev Bowan	1,500	
11/5/15	Mr Nunkoomar & Devkumar Jhuboo & Family	600	
11/5/15	Mrs Vijayantee Gooljar	500	
11/5/15	Mr & Mrs Prithviraj Choytun	1,000	
11/5/15	Mrs Indranee Aukhojee	100	
	TOTAL	**Rs 89,627.00/-**	

.....to be continued

With a clear sighted vision of truth and courage of determination, he preached and worked for our self-respect and vigorous awakening of mind that could strive for a harmonious adjustment with progressive spirit of the modern age, and, at the same time in perfect touch with the glorious past of India when it revealed its personality in freedom of thought and action in an unclouded radiance of spiritual 'realization'.

Rabindra Nath Tagore

ARYODAYE

Arya Sabha Mauritius

1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu

प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न

सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न

सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*

Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

श्रद्धांजलि यज्ञ

पिछले रविवार तारीख १९.०४.१५ को त्रिओले आर्य समाज शाखा नं० ६० ने, स्वर्गीय श्री सुकदेव रामनोथ जी की याद में, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया था, जिसका शुभारम्भ ठीक साढ़े आठ बजे, हवन-मंत्रों द्वारा किया गया। श्री दर्शन दुखी जी, पुरोहित, के साथ रामनोथ के पूरे परिवार ने हवन-मन्त्रों का उच्चारण किया ।

समाज के प्रधान श्री हितलाल मधु जी ने जीवन और मृत्यु के संबन्ध में बोलते हुए स्वर्गीय सुकदेव रामनोथ जी का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया। आपने बताया कि उनके आठ पुत्र और छः पुत्रियाँ थीं, जिनमें से सब से छोटे पुत्र का देहान्त कई वर्ष पहले हो चुका है। शेष सभी बच्चे विवाहित हैं और अपने-अपने परिवार के साथ सुखी जीवन बिता रहे हैं। स्वर्गीय सुकदेव जी ने स्वयं सभी दुखों को झेलते हुए अपने बच्चों को सुख देने का सफल प्रयास किया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए सभी ने प्रार्थना की और एक मिनट का मौन धारण किया ।

कार्य का संचालन श्री रोशन हरनाम जी कर रहे थे। सभागर खचाखच भरा हुआ था। हमारे वरिष्ठ पुरोहित पं० बुद्धु जी ने स्वर्गीय सुकदेव जी की ताकत और साहस की प्रशंसा करते हुए बताया कि उनके गाँव, प्वेंत ओ पिमाँ, में हमेशा ईसाई लोग हिन्दुओं पर अत्याचार किया करते थे, लेकिन जब वे स्वर्गीय मामू सुकदेव को देख लेते थे तब सबके सब परास्त हो जाते थे। उनका सामना करने का साहस कोई न कर सकता था। इतने बड़े बलवान् और साहसी थे मामू जी। ऐसे व्यक्ति के बारे में इतिहास को बार-बार बोलना होगा ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी साहसी और निर्भीक बनें। श्री धर्मानन्द रामनोथ की संगीत टोली द्वारा भजन और गीत प्रस्तुत होते रहे ।

अन्त में श्री सुरेश रामनोथ ने सभी सदस्यों को अपनी श्रद्धांजलि इतने भव्य रूप में अर्पित करने के लिए अपने पूरे रामनोथ परिवार की ओर से धन्यवाद किया।

कार्यक्रम शान्ति पाठ द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रस्थान होने से पहले सभी का सत्कार जल-पान द्वारा तीन बुतिक आर्य समाज त्रिओले ने किया।

प्रेषक - रामलीला
प्वेंत ओ पिमाँ

The 58th Anniversary Celebration of Derby Forest Side Arya Samaj

Ravindrasingh Gowd

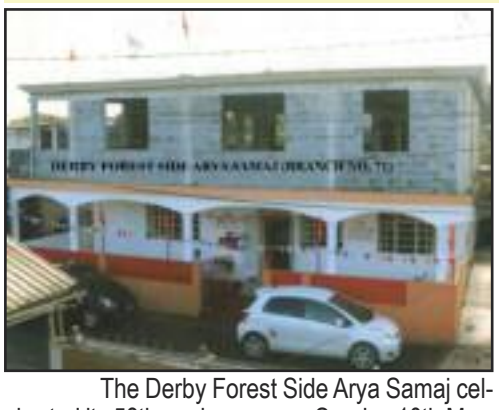

The Derby Forest Side Arya Samaj celebrated its 58th anniversary on Sunday 10th May, 2015 in the forenoon amidst eminent personalities who graced the function by their presence. The Chief Guest was Dr. O.N.Gangoo, OSK, Arya Ratna, President of Arya Sabha. Guests were Hon. Stephen Toussaint PPS, Mr. Ananda Rajoo, Mayor of Municipal Council of Curepipe, Shri Satyadeo Peerthum, CSK, Arya Ratna, Vice President of Arya Sabha Mauritius,Shri Ravindrasingh Gowd, Assistant Secretary of ASM and President of Plaines Wilhems Arya Zila Parishad, Smt Yalini Rughoo-Yallappa, Member of Managing Committee of ASM, and members of various branches of Arya Sabha.

The function started at 8.30 am with Yaj by Pt Khadoo and students of the Hindi School. It is good to note that it is common practice at Derby AS to encourage members to celebrate their anniversary and that of their children at the Samaj to tighten the Samaj-member link. Thus, Mrs. Hurnath, Mrs. Gunraj and Mrs Dhaneeram participated in the Sunday yaj on the occasion of their birthday. Congratulations to them.

After the yaj, there was children's programme with the recitation of Gayatri Mantra, Sandhya mantras, poems on the importance of education, importance of time, and devotional songs. The President, Shri Gokool made his welcome speech and thanked everyone for their presence and support in the organization of this function. He took the opportunity to give an overview of the Derby AS since its inception 58 years back till now with the addition of one storey so long awaited due to roof leakage. He pointed out that the land where this building stands was donated by Shri Goinsamy Venkatasamy in 1931 to the Paropkarini Sabha, now Arya Sabha Mauritius. He thanked all those who have contributed graciously , Arya Sabha, Members,other samajes, sponsors and the general public for the effort so far. However he made an appeal once more to all well-wishers to donate generously to complete the construction.

Dr. O.N. Gangoo in his address thanked the all the members and congratulated them for the effort in the realization of the project. He extended his appreciation to the children for their performance but there is a need of training with music synchronization for an added value. He also gave a clear explanation of the Gayatri Mantra as a source of inspiration and understanding the qualities of GOD. He reiterated that with such steps to involve children in the spiritual life will keep our youths and students away from bad habits and bad company. Through the chanting of God's name OM one protect himself or herself from the various ills of society.

Shri Ravindrasingh Gowd thanked the whole team of Derby Arya Samaj for their effort and commitments for the completion of the Mandir and expressed his wishes for an early completion.He laid emphasis on the importance of education in the upbringing of children and the development of MAN. The three preceptors of a child, that is, the Mother, the Father and the Acharya, are responsible to create a conducive environment and to guide a child to be on the right track at the right time to prepare him develop his physical, mental, spiritual and social capabilities to meet the challenges in life.

Shri Satyadev Peerthum dived into history to unveil the foundation of Arya Samaj and the excellent work being done by this Movement in Mauritius and India by adhering to the Vision and Mission of the Arya Samaj. Smt Yalini Rughoo-Yallapa expressed her appreciation for the constant progress being made by the members of Derby Arya Samaj and congratulated all the members for their effort made.

Hon. Stephen Toussaint, PPS and Mr. Ananda Rajoo, Mayor of Municipal Council of Curepipe, both praised the work being done by the Arya Samaj Movement in Mauritius and wished the Derby Arya Samaj plenty of success and ensure their assistance when the need is felt.

Mr.Vishwamitra Chinnia and Mrs. Chinnia and their Group gave an excellent presentation and Yoga posture demonstrations related to the seven Chakras in the body and the role of the energy generated to keep the body and mind always fit. Gifts were offered to students and music players who accompanied the students during their presentations. The ceremony ended with Vote of thanks by Pt Khadoo and Shanti Path, followed by a lunch graciously offered by Mr. B.Hurnauth, dynamic Secretary of Derby AS, and his family.

दर्शन योग महाविद्यालय

वार्षिक उत्सव २०१५ सम्पन्न

शनिवार २१ मार्च २०१५ का सूर्योदय गुजरात के साबरकांठा ज़िले के रोजड़ ग्राम में स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय के प्रांगण में एक नई चमकती उषा और वैभवी तेज लेकर आया। आज के दिन को दर्शन योग महाविद्यालय एवं आर्यवन ट्रस्ट ने सृष्टि निर्माण दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस के साथ वार्षिक उत्सव के रूप में मनाया। इस विद्यालय की स्थापना १९८६ में हुई थी। तब से लेकर आज तक विशुद्ध वैदिक योग के पचास से अधिक विद्वान्, दर्शनाचार्यों को इस महाविद्यालय में तैयार किया गया, जो विश्व कल्याण के लिए वेदों का अध्यापन व प्रचार कार्य में संलग्न हैं। यहाँ से प्रकाशित धार्मिक, आध्यात्मिक (साहित्य) पुस्तकें पूरे विश्व को सही दिशा दिखाने में उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

वार्षिकोत्सव के लिए पधारे तपस्वी, मुनि, संन्यासी, ब्रह्मचारी, विद्वान्, आचार्यों से यहाँ उपस्थित अतिथि व शहर के गणमान्य जनों ने उस अलौकिक ज्ञान को सीखा, जिसका आज पाखंड और दिशाभ्रमिक करने वाले युग में जन-जन तक पहुँचना अनिवार्य हो गया है।

आकाश में फैली सूर्य की लाल आभा के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। ऊषा ने अपनी किरणें चारों ओर बिखेरी तो यज्ञ में विशेष आहुति के साथ ऊँची उठती अग्नि ने मानो अपना आशीर्वाद दिया । तत्पश्चात् ओ३म् ध्वजारोहण और ध्वजगान किया गया।

आचार्य दिनेश जी के संचालन में समय आया, विद्वानों के मुख से अमृतवाणी सुनने का जिसमें सर्वप्रथम आचार्य वीरेन्द्र जी ने दोषों को त्यागने और गुणों को ग्रहण करने के लिये आत्माचिंतन, ध्यान करने वे स्नेहपूर्वक सबसे मिलने की शिक्षा दी। घर-घर में ओ३म् ध्वजा फहराने हेतु तथा दीपमाला के साथ इस पर्व को मनाने के लिए उन्होंने अनुरोध किया ।

दर्शन योग महाविद्यालय के आचार्य स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी, जो एक वर्ष के सघन साधना शिविर का संचालन भी कर रहे हैं, के अनुभव का लाभ सभी को मिला। संसार की वास्तविकता का बड़े ही रोचक ढंग से परिचय देते हुए अत्यंत सरल भाषा में उन्होंने बताया कि संसार आधा ही है, इसमें दुख तथा धोखे हैं। लेकिन यह संसार अभिशप्त नहीं हैं क्योंकि इसकी रचना एक दयालु मनीषी ने की है। जहाँ सूर्य-चन्द्र उदय होते हैं, नए अंकुर फूटते हैं। यह संसार वरदान है लेकिन उनके लिए जिनके हृदय में ईश्वर का अंकुर है। बस अभी अवसर है उस अंकुर को बाहर आने दो। ईश्वर के अनुकूल कृत्य करो, तृप्ति होगी, मुक्ति होगी। इसी समय अचानक तेज हवा के दबाव से टेंट एक ओर झुकने लगा जिससे लोग घबराकर भागने की तैयारी में अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गये परन्तु सचेत कार्यकर्ताओं ने स्थिति संभाल ली । इस पर स्वामी जी ने चुटकी ली कि देखो ये है संसार का एक स्वरूप है। इसमें हमेशा भय छिपा रहता है। लेकिन आप सुरक्षित रहे आपके प्रति यह ईश्वर का आशीर्वाद है। ईश्वर आपके साथ है जो की सदा दयालु, सबसे प्रेम करते हैं। इसके उपरान्त सभी मुस्कराते हुए अपने-अपने स्थान पर बैठ गये।

आचार्या इन्दु जी ने द्विज शक्ति से निवेदन किया कि परस्पर सहायक बनें । महर्षि के अनेक कार्य हैं जो अभी अधूरे हैं, उन्हें पूरा करना होगा। आप सभी बुद्धिजीवी हैं। इस प्रकार पुनरपि अनमोल बौद्धिक विरासत रखते हुए पिछड़े क्यों है इस पर चिंतन करें और एक साथ आगे आएँ।

आन्ध्रप्रदेश के आर्ष कन्या गुरुकुल अलियाबाद से पधारी आचार्य शीतल जी ने श्रोतागणों से प्रश्नोत्तर के माध्यम से कुछ दार्शनिक सिद्धांतों को समझाने का प्रयास किया और प्रतिपादित किया कि ईश्वर की सृष्टि कष्टमय नहीं अपितु सुखमय है। ईश्वर ने हमें वायु, जल, अन्न और अनेक आवश्यक पदार्थ दिये हैं, ज्ञान-विज्ञान दिया है, इन उपकारों को समझना चाहिए और सदा स्मरण रखना चाहिए। दर्शन योग महाविद्यालय के संस्थापक पूज्य श्री स्वामी सत्यपति जी महाराज अस्वस्थ होते हुए भी आधे घंटे के लिए उपस्थित हुए। सम्मान के बाद दस मिनट उन्होंने आर्य समाज के प्रथम दो नियमों को गहराई से समझाया। मनुष्य जीवन जब तक है, उतने में ही कोई जब ईश्वर को प्राप्त कर लेता है, तब यह जीवन सफल होता है अन्यथा विफल रहता है ।

अष्टांग योग, समाधि, स्वाध्याय, विधिपूर्वक योगाभ्यास मात्र शाब्दिक रूप से नहीं अपितु व्यावहारिक तौर पर यहाँ सिखाया जाता है इसकी जानकारी भी उन्होंने दी। जितनी भौतिक विद्याएँ है, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। (चाहे वह चन्द्रमा तक पहुँचने की तकनीकी विद्या हो या समाधि तक पहुँचने की अध्यात्म विद्या)। उन्होंने अपने हाथों से महाविद्यालय के ५ स्नातकों को दर्शनाचार्य और ३ महानुभावों को मानद दर्शनाचार्य के प्रमाण पत्र विद्यालय की ओर से प्रदान किये।

तत्पश्चात् आचार्य ज्ञानेश्वर जी ने जनमानस की अंतरात्मा को झकझोरा । उन्होंने समाज को चेताया कि आर्य खतरे में हैं। अभी नहीं जागे तो देर हो जाएगी। पेट की भूख को शांत करना बड़ा कार्य नहीं है किन्तु विद्वान् बनना बड़ा कार्य है। यदि देश में विद्वान् नहीं बनें तो देश की आत्मा भूखी रहेगी और जिस देश की आत्मा भूखी हो उस देश को विनाश से नहीं बचाया जा सकता। हम चारों तरफ़ से खतरे में हैं। हम अपने घरों में विद्वानों को नहीं बुलाते, जिससे संस्कृति का विनाश हो रहा है। धन दान कर देना, कर्तव्य पूर्ण होना नहीं है। अनाज, श्रम, दान करना भी उतना आवश्यक है। विद्यालय, गौशाला आदि दान देने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि स्वयं के लिए ही नहीं समाज और देश के लिए भी चिंतन करो।

अंत में दर्शन योग महाविद्यालय के निदेशक स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक ने लोगों से अपील की कि भोजन से भी अधिक आवश्यक वायु है । बिना भोजन के गुज़ारा हो सकता है पर वायु शुद्ध ना हो तो बिना वायु के हम कुछ क्षण भी जीवित नहीं रह सकते। हमारे फल, सब्ज़ियाँ, औषधियाँ सब यज्ञ से शुद्ध होते थे। पहले घर घर में यज्ञ का प्रावधान था, अब फैशन मात्र हो गया है। इसे जीवन का हिस्सा बनाओ। इसके अतिरिक्त माता-पिता व बच्चों के बीच संबंध कैसा हो, यह बताया। हमारे जीवन व व्यवहार हमारे मौखिक उपदेश की तुलना में अधिक प्रभावशाली होता है, इसके साथ ही दंड के बिना कोई सुधरता नहीं यह संदेश भी उन्होंने दिया। अन्त में सबका आभार प्रदर्शित किया। पुनः शांतिपाठ की ध्वनि व प्रीतिभोज से कार्यक्रम सफलता पूर्वक हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

Sukhi Parivaar and Aryan values amidst Youth

Prof. Soodursun Jugessur, CSK,GOSK, Arya Bhushan

The Arya Samaj lays much emphasis on the parental role in making children imbibe the proper Sanskar, i.e right attitudes and habits that lead to noble Aryan life. The objective is to have a family and society where everybody lives in peace, harmony and happiness, and progress as a united family. In fact we wish to see the whole world, irrespective of race or religion, as one family, (Vasudaiva Kutumbakam)! How can we ensure such development?

For some time now Sukhi Parivaar has been working with communities and organizations, educating them on current social, environmental and economic issues, as seen locally and in the world. With examples of how negative change has occurred over the ages, people are made aware of the need to adopt new lifestyles, revert to living habits that are healthier and that enhance the quality of life. Stress is placed on the crucial need to make parents assume their critical role in the education of their children, and not leaving things totally in the hands of others. Our society is only a mirror of our own mental attitude to the way we interact with others, with all living beings. Understanding why we do things in a particular way is the first step towards mindset change.

The program stresses on regular dialogues within the family, the primary cell of the society. This has been known for ages, but the uniqueness of this program is in requiring family members to sit down for half an hour before dinner, and after a short prayer in a language they understand, simply share each one's experiences during the day. By listening to the problems and successes of each member (dukh- sukh) of the family, from the elderly to the youngest, one develops mutual understanding, trust, empathy, love and most important, the need for sharing and supporting one another mutually.

We keep on asking people to adopt team work in our places of work. How can this be possible if the people haven't learnt to develop the spirit of sharing and trust within their family itself? Mental attitudes and habits crystallize over time, and these start right from infancy. When these have been ignored in the early phases of development, any real progress at a later stage can only be marginal. No wonder we see so many conflicts in different corners of the world! The spirit of trust and sharing is simply missing! In their place there is exploitation, a perverted sense of the ego, individualism at its peak, greed and desire to control all in order to safeguard acquired material gains. People have mistaken material wealth as determinant of peace and happiness. Happiness keeps eluding such people and nations, and peace is so transitory. Huge sums of money are spent on health care programs, physical and social security and formal education programs, but little on bringing mutual understanding within the family itself.

The youth are guided by the lavish lifestyles of their media idols whom they want to emulate. They have been made to believe that it is their life, and they have to live it to the fullest possible, sucking every ounce of the juices of nature. To hell with the need for sacrifices! To hell with the need for living a life that requires perseverance, patience, hard work, and sacrifice for a better world. Their innate idealism is washed away by the role models they see around. They are taught to pass their examinations with high marks so as to get a cushy job in a highly competitive world. Once they succeed in this, their priority is to become rich fast, have their own car, house, personal comforts, and in this venture, they most often lose their sense of belonging to the society, even their duty towards their parents and elders.

Closing the generation gap and integrating the elderly.

In the program we teach them to preserve family values and share their lives with the members, integrate the elderly within the family and understand the importance of sacrifice. We give them many examples of people who have tons of money in banks, all the material possessions they wished for, but in the long run, when they are old, and when one partner (husband or wife) passes away, their children are not with them. They are considered as a burden to the family, and forced to land up in 'homes' where reluctant nurses take care of them. They spend their last days feeling terribly lonely, missing the warmth of the family, and their last moments in a physical and mental state that none of them would wish to experience. We encourage them to visit such homes and spend some time with the elders so that they develop greater empathy for them. We ask them if they wish to spend their last moments in such a state.

We appeal to Headmasters, Rectors, Managers of schools and colleges to organize such visits of their students to homes in the locality, and allow the youth to interact with the elderly there. We organize competitions on the integration of the elderly within the family. We are appealing to architects and housing authorities to ensure that new buildings have a corner in the house especially reserved for the elderly so that they are not thrown out of the house as burdens to the selfish younger ones.

Through such programs we aim at bringing back family values in our midst. For millenniums humanity has existed and over the ages discovered ways and means on how to live in harmony, more at peace with itself and with nature. These values are the greatest riches that our ancestors have bequeathed to us! Modern development should not discard them for new value systems based on materialist living, ruthless exploitation of nature, and promotion of a world based purely on market-forces. Aryan values have to be brought back.

As the future is in our hands, it is for us to shape it so that we don't end up in a miserable world, alone in homes, praying for death to take us away!

www.sukhiparivaar.org

Programme Planning and Welfare Committee

The list of Members of 'Programme Planning and Welfare Committee' of 2015-2016 reads as follows :

1. Prof. Soodursun Jugessur, *Chairman*
2. Dr. Oudaye Narain Gangoo, *Ex-Officio*
3. Mr. Harrydev Ramdhony
4. Mr. Vikram Seebaluck
5. Mr. Ravindrasingh Gowd
6. Mr. Dharamveer Gangoo
7. Mr. Devpal Cowreea
8. Mr. Shyam Hurbungs
9. Mrs. Poonam Sookun Teeluckdharry
10. Mrs. Aryavati Boolaucky
11. Mr. Ravindra Sewpal
12. Mr. Deelrazsingh Teeluck
13. Mr. Anil Kumar Kokil

Think Tank Members

1. Dr. Jagdish Chandra Mohit
2. Judge Bhushan Domah
3. Mr. Premchan Mohith
4. Judge Ramparsad Proag
5. Mr. Nikhil Teerbhowan
6. Prof. Soodursun Jugessur
7. Dr. Roodrasen Neewoor
8. Dr. Oudaye Narain Gangoo, *Ex-Officio*

I am available for further consultation on the above.

With best wishes,

Prof. S. Jugessur, Mob: 5257 8227

OM

MAURITIUS ARYA YUVAK SANGH

ARYA SABHA MAURITIUS

08 MAY 2015

Attn : - To Arya Samaj / Mahila Samaj Branches' Youth Wings

Re : **Quiz Competition, Elocution Contest, Essay Competition& Powerpoint Presentation**

In the context of the Satyarth Prakash Celebration and the National Youth Day Celebrations, the Mauritius Arya Yuvak Sangh under the aegis of Arya Sabha Mauritius is organising the following competitions :-

(1) Quiz Competition

(i) Age limit for participation between 12 and 15 years (Boys & Girls)
(ii) A team of at least 3 participants.
(iii) **Closing date for submission of application for participation including names and contact numbers of participants - 06June 2015.**
(iv) Topic : Questions will be set on :- (a) Satyarth Prakash – Chapters 1 to 10
(b) Life of Swami Dayanand
(c)Social Reforms of Arya Samaj Movement

(2) Essay Competition in Hindi and English for S.C. students

(i) Topic (Hindi) :- विद्यालयों में अनुशासन अभाव की समस्या का समाधान सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय एवं तृतीय समुल्लास में निहित है। अपने विचार व्यक्त कीजिए ।
Topic (English) :- 'The Satyarth Prakash aims at creating a healthy society'. Discuss.
(ii) Essay should be between 350-500 words.
(iii) **Closing date – Saturday 06 June 2015.** ***NOTE* : Participants will have to write the essay on spot (i.e Arya Sabha)**

(3) Elocution Contest in Hindi and English for H.S.C. students

(i) Topic (Hindi) :- आधुनिक युग में सत्यार्थप्रकाश की प्रासंगिकता (relevance)।
Topic (English) :- The Satyarth Prakash as a guide to Humanity in this modern society.
(ii) Speech should be of 10 minutes.
(iii) **Closing date for submission of participation –Saturday 06 June 2015.**

(4) Power-Point Presentation

Topics :-

(i) Life and Achievements of Swami Dayanand or (ii) Contribution of Arya Samaj in Mauritius or (iii) Yajna : a solution to Global warming

Age Limit : 20 to 30 years

Closing Date of Submission of application and copy of presentation on CD to be sent to the office of the Sabha by **latest Saturday 13 June 2015**. The presentation should consist of around 40 slides (comprising of texts and photos).

The Quiz Competition, Essay Writing, Elocution Contest and Powerpoint Presentation will be held on Saturday 20th June 2015 as from 9.30 a.m. at the seat of Arya Sabha Mauritius, Port Louis.

N.B. – *The President and Members of the Arya Samaj are requested to set up a youth wing in their respective branches of Arya Samaj. However, if an Arya Yuvak Sangh already exists, you are requested to send the list of office bearers to the address mentioned below.*

All participants are requested to send their applications on the address stated below :-

Mr Pravin Boodhun
Secretary Mauritius Arya Yuvak Sangh
1, Maharshi Dayanand Street, Port Louis
Tel : 2122730

For any further details please contact the President or Secretary on the mentioned phone numbers.

(sd) Dharamveer Gangoo — *President* — Mob: 57509343

(sd) Pravin Boodhun — *Secretary* — Mob: 59512418

OM

Gayasingh Ashram Committee

List of Members for the year 2015-2016

S/N	*Name*	*Post Occupied*
1.	Mr GOWD Ravindrasingh,	*President*
2.	Mrs BOODHOO Deoranee,	*Vice president*
3.	Mr VARMA Jyotindra Nath,	*Vice president*
4.	Mrs YALLAPA Yallini Rughoo,	*Secretary*
5.	Mr RAMDOSS Sonalall,	*Asst. Secretary*
6.	Mr JAHAJEEAH Satish,	*Asst. Secretary*
7.	Mrs BHUCKORY Chandranee, P.D.S.M,	*Manager*
8.	Mr GOOLAUB Bissoondial, P.M.S.M,	*Asst. Manager*
9.	Dr. LALLBEEHARRY Jaychand, MA, M.Ed, PhD,	*Member*
10.	Mr NURJHANDHOOA Balmick, Arya Bhushan,	*Member*
11.	Mr JEEWUTH Vidhata,	*Member*
12.	Mr RAMPHUL Ramkaran,O.S.K.,	*Member*
13.	Mr BHOWANEE Sewduth,	*Member*
14.	Mr DOOKHEE Priamvada,	*Member*
15.	Mrs SOOKUN - TEELUCKDHARRY Poornima Devi,LLB, Barrister at Law,	*Member*
16.	Mr KANHYE Sudhir,	*Member*
17.	Mrs PEENITH Saraswatee, Arya Bhushan,	*Member*
18.	Mr RAMDHONY Harrydev, Arya Ratna,	*Member*
19.	Mr JODHUN Devendra,	*Member*
20.	Dr. GANGOO Oudaye Narain,M.A,Ph.D,O.S.K,Arya Ratna,	*Ex-Officio Member*